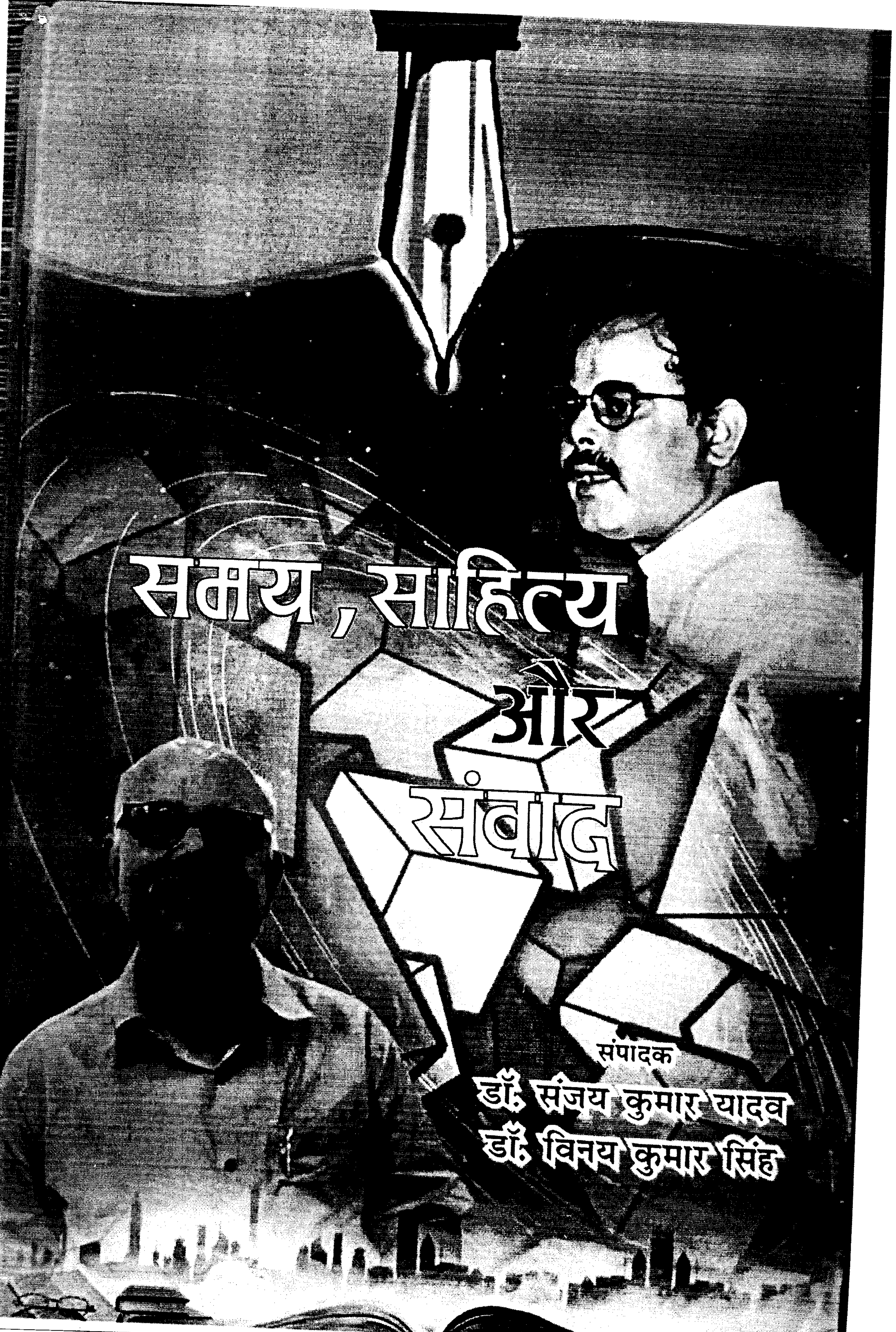
समय, साहित्य
और
संवाद
संपादक
डॉ. संजय कुमार यादव
डॉ. विनय कुमार सिंह

समय, साहित्य और संवाद

संपादक
डॉ. संजय कुमार यादव
डॉ. विनय कुमार सिंह

अभिधा प्रकाशन

परामर्शक-मंडल
प्रो. कल्याण कुमार झा, डॉ. राकेश रंजन, डॉ. सुनील कुमार

संपादक-मंडल
डॉ. हेमा कुमारी, डॉ. भोला प्रसाद यादव, डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन', अतुल आजाद

ISBN : 978-93-92342-46-2

प्रथम संस्करण
2022

सर्वाधिकार
लेखकाधीन

प्रकाशक
अभिधा प्रकाशन
रामदयालु नगर, मुजफ्फरपुर-842002
दिल्ली कार्यालय
जी72, गंगा विहार, गोकुलपुरी, दिल्ली-110094

अक्षर-संयोजन
एस. कुमार

आवरण
हिमांशु राज

मुद्रक
बी० के० ऑफसेट, दिल्ली-32

मूल्य
1100/- (ग्यारह सौ रुपये)

Samay, Sahitya aur Samwad
Edited By **Dr. Sanjay Kumar Yadav & Dr. Vinay Kumar Singh**
Rs. 1100.00

अनुक्रम

संपादकीय

शब्द-सारथी की अक्षर-यात्रा/ डॉ. संजय कुमार यादव एवं डॉ. विनय कुमार सिंह/9

संस्मरण

1. श्रम, पुरुषार्थ और प्रतिभा का प्रतिमान : सतीश कुमार राय/ डॉ. परमेश्वर भक्त/13
2. 'पर-उपकार वचन मन काया' के विग्रह : डॉ. सतीश कुमार राय/ डॉ. जंगबहादुर पांडेय 'तारेश'/17
3. डॉ. सतीश कुमार राय का लेखकीय व संपादकीय व्यक्तित्व/ साकेत बिहारी शर्मा 'मंत्र मुदित'/28
4. साहित्य-सागर का अनमोल मोती/डॉ. गोरख प्रसाद मस्ताना/34
5. प्रतिमानों के प्रतिमान डॉ. सतीश कुमार राय 'अनजान'/चतुर्भुज मिश्र/38
6. संवाद का सहज संवेदन और संवेदन का सार्थक सृजन/डॉ. संजय पंकज/42
7. चंपारन का गौरव बढ़ानेवाले विद्वान डॉ. सतीश कुमार राय/ अंजनी कुमार सिन्हा/48
8. वो देखो! रौशन हुआ जाता है रस्ता.../डॉ. रामेश्वर द्विवेदी/51
9. अनजान को जितना मैंने जाना है/प्रो. (डॉ.) सुरेंद्र प्रसाद केसरी/61
10. चंपारन के रत्न : डॉ. सतीश कुमार राय/प्रो. (डॉ.) पुष्पा गुप्ता/64
11. डॉ. सतीश कुमार राय : एक सहज व्यक्तित्व/प्रो. (डॉ.) संत साह/69
12. प्रो. सतीश कुमार राय : सहज व्यक्तित्व के पुरुषार्थी/प्रो. राजीव कुमार झा/72
13. मेरी राय में प्रो. सतीश कुमार राय/डॉ. श्रीकांत सिंह/75
14. एक चुंबकीय व्यक्तित्व/डॉ. मधुसूदन मणि त्रिपाठी/78
15. डॉ. सतीश कुमार राय 'अनजान' से नामचीन तक/डॉ. मृगेंद्र कुमार/81
16. अनजान से अभिज्ञान तक/डॉ. तारकेश्वर उपाध्याय/88
17. मेरे लिए सतीश के होने का मतलब/डॉ. अनिल कुमार राय/92
18. उपलब्धियों के शिखर-पुरुष डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. शैल कुमारी वर्मा/95
19. शीतल झरने के मीठे पानी जैसा व्यक्तित्व : प्रो. सतीश कुमार राय जी!/ डॉ. शकील मोईन/98
20. गुफ्तगू में ही झलकती विद्वत्ता/जफर इमाम/100
21. भाई सतीश : एक दृष्टि/लालबाबू शर्मा/103

22. विरल व्यक्तित्व के धनी डॉ. सतीश कुमार राय 'अनजान'/
डॉ. रामनरेश पंडित रमण/105
23. नमामि वीथिनायकम्!/डॉ. उपेंद्र प्रसाद/108
24. सतीश : मेरा मित्र/मनोज मोहन/113
25. हर दिल अजीज : प्रोफेसर सतीश कुमार राय/डॉ. राजीव कुमार/116
26. सहज और निश्छल साथी : सतीश कुमार राय/अशोक गुप्त/120
27. सहज, सरल और आत्मीय बंधु प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/
अरविंद कुमार/124
28. जीवेत शरदः शतम्/डॉ. मधु रचना/131
29. कर्मठता और मेधा के प्रतिमान भाई 'अनजान'/डॉ. नागेंद्र सिंह/134
30. भैया, साइकिल चलाना सीख लीजिए न/डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी/137
31. प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय 'अनजान' से जुड़े संस्मरण/सुरेश गुप्त/149
32. संघर्ष की प्रतिमूर्ति/अरुण गोपाल/163
33. डॉ. सतीश कुमार राय : एक साहित्यिक गौरव-पुरुष/डॉ. दिवाकर राय/165
34. प्रखर व्यक्तित्व, समर्पित शख्सियत डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. सीमा स्वधा/181
35. प्रोफेसर राय को जैसा मैंने जाना/डॉ. अनिता सिंह/185
36. डॉ. सतीश कुमार राय : मेरी नजरों में/डॉ. विजयिनी/187
37. अभिनव अनजान/डॉ. जगमोहन कुमार/189
38. मेरे प्रेरक, मेरे सर्जक : डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. हेमा कुमारी/193
39. अनमोल स्मृतियाँ/डॉ. चंद्रलता कुमारी/201
40. गुरुवर : एक परिचय/डॉ. राकेश कुमार/205
41. सहज व्यक्तित्व और प्रखर कर्तृत्व के प्रतिमान/डॉ. कुमार अनुभव/208
42. मेरे गुरुदेव डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. राकेश रंजन/212
43. सर के सान्निध्य में : एक संस्मरण/डॉ. हर्षलता सिंह/217
44. हिंदी के बहुआयामी साधक सतीश राय 'अनजान'/डॉ. संदीप कुमार सिंह/220
45. शोध की अभिलाषा से गुरुदेव मिले/डॉ. संजय कुमार सिंह/222
46. गुरुवर डॉ. सतीश कुमार राय के चरणों में समर्पित संस्मरण के दो शब्द/
डॉ. विजय कुमार पांडेय/225
47. अतीत के पन्नों में मेरे गुरुवर डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. रश्मि कुमारी/228
48. मेरे जीवन-पथ का पाथेय/डॉ. प्रकाश कुमार/232
49. समन्वय और सामंजस्य के अद्भुत कलाकार डॉ. सतीश कुमार राय/
डॉ. प्रीति मणि/237
50. हिंदी के विशाल छायादार वृक्ष प्रो. सतीश कुमार राय/डॉ. यशवंत कुमार/241

51. मेरे गुरु प्रो. सतीश कुमार राय/डॉ. प्रवेश कुमार पासवान/245
52. हिंदी साहित्य के नवल स्तंभ प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/
डॉ. राजेश कुमार चंदेल/247
53. आकाशधर्मा गुरु/डॉ. जितेंद्र कुमार/250
54. आकाशधर्मा गुरुवर सतीश कुमार राय/डॉ. भोला प्रसाद यादव/253
55. सहजता, सरलता और सहृदयता के छतनार वटवृक्ष : श्रद्धेय गुरुवर/
डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन'/261
56. शोध-मर्मज्ञ प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/डॉ. चंद्रभान राम/265
57. अभिनंदन-अभिनंदन/कुमारी रोशनी विश्वकर्मा/269
58. कवि सतीश कुमार राय को जितना मैं जानता हूँ/अविनाश कुमार पांडेय/272
59. सहज व्यक्तित्व : डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. गुंजन श्रीवास्तव/276
60. ज्ञान के सागर/डॉ. पूजा/279
61. आँखों देखा सुख/अतुल आजाद/281
62. प्रेरक व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धा-निवेदन/रश्मि शर्मा/286
63. मेरे प्रेरक और दिशा-निर्देशक/शारदा सिन्हा/288
64. गुरु-कृपा और मैं/पिंकी कुमारी/290
65. दिशाबोध करानेवाले प्रेरक आचार्य सतीश कुमार राय/सुजाता कुमारी/292
66. आचार्यत्व को धन्य करनेवाले गुरु/गीतांजलि कुमारी/296
67. आदरणीय गुरुवर डॉ. सतीश कुमार राय/रेशमी कुमारी/299
68. मेरे अर्द्धनारीश्वर : मेरी दृष्टि में/प्रभा राय/302
69. मेरे पिता : जैसा मैंने जाना/डॉ. प्रज्ञा सुरभि/305
70. डॉ. सतीश कुमार राय : एक व्यक्तित्व के अनेक आयाम/समीक्षा सुरभि/309
71. 'अनजान' से अध्यक्ष तक/प्रो. त्रिविक्रम नारायण सिंह/318
72. सिद्ध आचार्य की षष्टिपूर्ति/प्रो. कल्याण कुमार झा/333
73. सारस्वत साधना के सिद्ध साधक : सतीश कुमार राय/डॉ. वीरेंद्रनाथ मिश्र/346
74. देखा न कोहकन कोई फ़रहाद के बग़ैर/डॉ. राकेश रंजन/350
75. ओहदेदार होने से अधिक आदमी होने की कला/डॉ. उज्ज्वल आलोक/361
76. शिक्षक, अध्यापक एवं गुरु के रूप में प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/
डॉ. सुशांत कुमार/367
77. 'हिंदी विभाग एक परिवार है'/डॉ. संध्या पांडेय/372
78. 'अपनी मिट्टी का ऋण अब तक नहीं उतार पाया हूँ!'/डॉ. पुष्पेंद्र कुमार/374
79. कुशल प्रशासक डॉ. सतीश कुमार राय/मनोज कुमार/384
80. प्रेरणादायक गुरु डॉ. सतीश कुमार राय/अमित कुमार कर्ण/386

मूल्यांकन

81. 'अब नहीं मैं गीत गाने जा रहा हूँ' : डॉ सतीश कुमार राय : एक समग्र मूल्यांकन/ प्रो. (डॉ.) अरुण कुमार/389
82. सतीश कुमार राय 'अनजान' का कवित्व : एक टिप्पणी/प्रो. रवींद्र उपाध्याय/412
83. उपेक्षित जनपदीय रचनाशीलता के प्रतिबद्ध संकलक-उद्धारक व्यक्तित्व/ प्रो. रमेश ऋतंभर/415
84. चंपारन और प्रो. राय : कहियत भिन्न न भिन्न/डॉ. विनय कुमार सिंह/418
85. डॉ. सतीश कुमार राय की संपादन-दृष्टि/डॉ. सुनील कुमार/425
86. डॉ. सतीश कुमार राय की शोध एवं आलोचना-दृष्टि/डॉ. पवन कुमार/448
87. 'दर्द सहने की तो आदत बहुत पुरानी है'/डॉ. पंकज कर्ण/467
88. शोध का प्रतिमान : एकांकीकार भुवनेश्वर का यथार्थबोध/डॉ. अनिता कुमारी/471
89. कवि, शायर डॉ. सतीश कुमार राय/राहुल कुमार/475
90. प्रखर शोध-दृष्टि का प्रतिमान : पत्रकार प्रेमचंद/सपना कुमारी/479
91. डॉ. सतीश कुमार राय की आलोचना-दृष्टि/रितु प्रिया/488
92. समृद्ध साहित्यिक-सांस्कृतिक परंपराओं का आईना/दिलीप कुमार/497
93. गोपाल सिंह 'नेपाली' : एक मूल्यांकन/सोनम कुमारी/501
94. डॉ. सतीश कुमार राय की दृष्टि में 'नेपाली'/प्रशांत प्रसाद/505

साक्षात्कार

95. डॉ. सतीश कुमार राय से एक अंतरंग बातचीत/ डॉ. माधव कुमार/514
96. 'अध्यापन मेरे लिए पेशा ही नहीं, धर्म भी है।'/ डॉ. सतीश कुमार राय से डॉ. अनु की बातचीत/537

कविता

97. साहित्यकार श्री सतीश कुमार राय की साठवीं वर्षगाँठ पर/व्रतराज 'विकल'/542
98. हे ज्ञानवान!/डॉ. विनय कुमार सिंह/545
99. सतीश राय होने का मतलब/डॉ. सतीश कुमार 'साथी'/546
100. गुरुवर की अंतस्-गरिमा/अंजनी अपूर्वा/548
101. डॉ. सोनी की दो कविताएँ/549
102. वीणा द्विवेदी की दो कविताएँ/552
103. अक्षर-देह रजनीगंधा है/डॉ. संजय कुमार यादव/563

जीवन-वृत्त/577
चित्र-वीथिका/593

सिद्ध आचार्य की षष्टिपूर्ति

–प्रो. कल्याण कुमार झा

बात सन् 1982 की है। मैं छठी कक्षा का विद्यार्थी था। मुझे राज्य-स्तरीय छात्रवृत्ति प्राप्त होने की सूचना मिली। मेरा परिवार प्रसन्न था। इस वातावरण में मेरे पिता श्री गजाधर झा ने यह बताया कि श्री दामोदर बाबू के सुपुत्र श्री सतीश कुमार राय ने बी.ए. ऑनर्स की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इससे पहले मैं अपने पिताजी के मुख से यह सुन चुका था कि प्रो. अविनाश चंद्र मिश्र ने पटना विश्वविद्यालय में प्रथम श्रेणी में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। उस समय मैं यह समझ नहीं पाता था कि प्रथम श्रेणी में प्रथम और प्रथम श्रेणी में द्वितीय स्थान का अर्थ क्या होता है? कोई दो वर्ष बाद जब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता था तब मेरे पिताजी ने घर में यह सूचना दी कि उन्हें प्रोफेसर बलराम मिश्रजी ने बताया है कि श्री सतीश कुमार राय ने एम.ए. की परीक्षा में भी विश्वविद्यालय में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान पानेवाले को स्वर्ण पदक मिलता है।

इसी दौरान मैं पिताजी के साथ टाँगे पर सवार होकर बेतिया गया। वहाँ काशी पुस्तक मंदिर भंडार में श्री काशीनाथ तिवारी, उनके सुपुत्र श्री भूपेंद्र तिवारी, आकाशवाणी के जिला संवाददाता श्री गंगानंदन झा 'कलाधर' के साथ सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति प्रो. बलराम मिश्रजी को देखने का अवसर मिला। इस पुस्तक भंडार में पुस्तकों के अलावा ज्ञान-पिपासुओं की अक्सर बैठक होती थी। उन बैठकों में एक मेधावी विद्यार्थी और सुयोग्य पुत्र के रूप में प्रो. सतीश कुमार रायजी का नाम गौरव से लिया जाता था। चंपारन की एक परंपरा है कि वहाँ के अभिभावक अपने बच्चों को अभिप्रेरित करने के लिए मेधावी लोगों की चर्चाएँ अक्सर किया करते हैं। इसके पीछे पैतृक भाव यह होता है कि उनकी संतति इसी तरह से अपनी मेधा को विकसित करे। मार्गदर्शन का यह सकारात्मक व्यावहारिक नमूना कम देखने को मिलता है। जैसे 'जीवन और शिक्षण' शीर्षक निबंध में विनोबा भावे ने

व्यावहारिक शिक्षा पर बल दिया, ठीक वैसे ही चंपारन के अभिभावक प्रातिभों की चर्चा कर तथा उनसे मिलाकर अपने बच्चों को अभिप्रेरित करते हैं। यह नियम सिर्फ चंपारन पर लागू नहीं होता है। यह एक भारतीय परंपरा है।

अब थोड़ी चंपारन की बात कर लेते हैं। पश्चिम चंपारन जिले के उत्तर में हिमालय और नेपाल, पश्चिम में गोरखपुर, पूरब में पूर्वी चंपारन और दक्षिण में सीवान जिला है। हिमालय के दक्षिणी भाग का नाम सोमेश्वर है। सोमेश्वर का कुछ हिस्सा पश्चिम चंपारन में पड़ता है। चंपारन की चौहद्दी का जिक्र करने के पीछे मेरा उद्देश्य यह है कि वैसे लोग जो चंपारन की धरती से शक्ति प्राप्त कर अपने व्यक्तित्व को चौहद्दी की सीमा से परे ले जाकर उसे ऊर्ध्वमुखी बना लेते हैं, उनमें से एक हैं प्रो. सतीश कुमार राय। प्रो. राय का व्यक्तित्व ठीक वैसा ही है जैसे चावलों में पश्चिम चंपारन का बासमती, चूड़ा में मरीचा, आम में जर्दा और मछली में सरेयामन की रोहू, गुड़ में जोगिया मिट्ठा आदि। इन खाद्य पदार्थों के स्वाद में सुगंध है; पौष्टिकता में ताकत के साथ नैतिक बल है। साथ ही, ईमानदारी के साथ भरोसा है; साथ निभाने की शक्ति है और निर्भय-निर्भीक बने रहने की इच्छाशक्ति भी।

प्रो. सतीश कुमार राय के व्यक्तित्व-निर्माण में चंपारन के वातावरण का विशिष्ट योगदान है। जिले की पुरानी नदी नारायणी है। ऐसी मान्यता है कि यह नदी पहले जिले के बीचोबीच होकर बहती थी। कालांतर में यह जिले की दक्षिणी सीमा हो गई। नारायणी, जिसे गंडक या शालग्रामी नदी कहते हैं। यह हिमालय के त्रिवेणी नामक स्थान से निकली है। इस नदी के अलावा जिले की दूसरी प्रमुख नदी छोटी गंडक है। यह सोमेश्वर की पहाड़ी से निकलकर जिले के बीचोबीच होकर बहती है। पहाड़ से निकलने पर कुछ दूर तक इसका नाम 'हरहा' और आगे चलकर 'शिकरहना' और उससे आगे चलकर 'बूढ़ी गंडक' के रूप में प्रसिद्ध है। प्रो. राय के व्यक्तित्व को समझने के लिए चंपारन की नदियों को समझना होगा। नदी जीवन है। यह जीवन और पोषण दोनों की प्रदायिका है। पहाड़ देखने में कठोर जरूर हैं, लेकिन मनुष्य के जीवन को गति देने में उनकी मौलिक और महती भूमिका होती है।

मनुष्य का शरीर पाँच तत्त्वों से मिलकर बना है। उसमें एक तत्त्व है–मिट्टी। चंपारन की मिट्टी दो प्रकार की है। शिकरहना नदी के उत्तर की मिट्टी, जिसे बांगर कहते हैं। यह मिट्टी धान की खेती के लिए उपयुक्त है। इस नदी के दक्षिण की मिट्टी में बालू अधिक होने के कारण इसे भीठ बोलते हैं। चंपारन के लोगों का व्यक्तित्व बांगर और भीठ दोनों प्रकार की मिट्टियों की विशेषताओं को अपने भीतर समाहित किए हुए है। प्रो. सतीश कुमार राय का पूरा व्यक्तित्व चंपारन के समस्त गुणों को धारण किए हुए है।

चंपारन का कोई भी व्यक्ति जब साहित्य का विद्यार्थी बनता है तो सबसे पहले उसे उत्तर-छायावाद काल के श्रेष्ठ कवि गोपाल सिंह 'नेपाली' आकर्षित करते हैं। प्राय: साहित्यकार अपने नाम के आगे कोई न कोई उपनाम जरूर लगाते हैं। संभवत: यही वजह है कि प्रो. सतीश कुमार राय ने जब कविताएँ लिखनी शुरू कीं तो अपने नाम के आगे 'अनजान' उपनाम लगाया। किशोरावस्था से ही कविकर्म में जुटे प्रो. सतीश कुमार राय वर्तमान में विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के यशस्वी अध्यक्ष के रूप में सुविख्यात हैं। हिंदी के अत्यंत समर्थ और समर्पित प्राध्यापक के रूप में इनकी सफलता परम प्रमाणित है। हिंदी आलोचना, शोध और अनुसंधान के क्षेत्र में, विशेष तौर पर, इन्होंने अपनी कृतियों से अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं। हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में भी इनका अद्वितीय योगदान है। विश्वविद्यालय के विभिन्न महत्त्वपूर्ण और गरिमामय प्रशासनिक पदों पर रहते हुए इन्होंने अपनी दक्षता प्रमाणित की है।

प्रो. सतीश कुमार राय की शिक्षा-दीक्षा चंपारन और मुजफ्फरपुर में ही हुई। अध्यापन-कार्य इन्होंने मगध विश्वविद्यालय के सोहसराय महाविद्यालय से आरंभ किया। 1993 ई. में स्थानांतरित होकर बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में आए। प्रो. सतीश कुमार राय साठ वर्ष के होनेवाले हैं। इन साठ वर्षों में इन्होंने कोई तीस वर्ष बेतिया में और बाकी के तीस वर्ष मुजफ्फरपुर में बिताए हैं। घर बेतिया, ससुराल मुजफ्फरपुर और कर्मस्थली भी मुजफ्फरपुर ही है।

प्रो. राय के व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण पक्ष चंपारन से जुड़ा है। कहते हैं कि कोई भूमि यों ही उपजाऊ नहीं हुआ करती। उसके पीछे जल, तापमान, वायु, सूक्ष्मजीव तथा अनेक प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों की बड़ी

महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। नदियाँ हजारों किलोमीटर से पर्वतों के बीच से बहती हुई, उन्हीं को तोड़ती हुई, उन्हें छोटे-छोटे पत्थरों के पश्चात् महीन भू-तत्त्व में तबदील कर देती हैं। फिर वायुमंडल में उपस्थित वायु, तापमान एवं सूक्ष्मजीव मिलकर उस भूमि को उपजाऊ बनाते हैं। ठीक उसी प्रकार से प्रो. सतीश कुमार राय के बहुआयामी व्यक्तित्व का निर्माण चंपारन के अनेक विद्वान साहित्यकारों के संपर्क में आने एवं उनके साथ निरंतर साहित्यिक विमर्श करने से हुआ है। लेकिन यह भी कहना मुनासिब होगा कि उनके व्यक्तित्व के निर्माण में न सिर्फ चंपारन के साहित्यिक आचार्यों, बल्कि उनकी मित्र-मंडली एवं शिष्यों की भी भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। इसलिए आज जो प्रो. राय साहित्यिक जगत् में हम सब के समक्ष उपस्थित हैं, उसमें चंपारन की भूमि से ग्रहण की गई साहित्यिक ऊर्जा का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

नदियाँ युवावस्था में अपने मार्ग को गहरा करती हुई आगे बढ़ती रहती हैं। अपने मार्ग को गहरा करने के लिए वे अपनी ही जलीय ऊर्जा के साथ-साथ पर्वतों के अपरदन से प्राप्त कणों एवं कणिकाओं का उपयोग करती हैं। प्रो. राय भी अपनी युवावस्था में ठीक नदियों की भाँति अपने साहित्यिक व्यक्तित्व को गहराई प्रदान करने हेतु अपनी मेधा का उपयोग तो करते ही हैं, साथ ही साथ चंपारन के साहित्यिक आचार्यों से प्राप्त ज्ञान का उपयोग भी निरंतर करते रहते हैं। यही कारण है कि उनका साहित्यिक व्यक्तित्व एकाकी नहीं है, बल्कि समावेशी है।

नदियाँ प्रौढ़ावस्था में पर्वतों से उतरकर समतल में प्रवाहित होती हुई जीवनदायिनी बन जाती हैं। इस अवस्था में सामान्य तौर पर नदियाँ अपने पाटों का विस्तार करती हैं। पाटों के विस्तार में भी वे पूर्व में संचयित ऊर्जा का उपयोग करती हुई प्रकृति के अनुरूप विन्यस्त होती जाती हैं। ठीक नदियों की प्रौढ़ावस्था की तरह प्रो. सतीश कुमार राय का व्यक्तित्व भी आकार लेता हुआ नजर आता है। वे इस अवस्था में अपने व्यक्तित्व के प्रभाव को विस्तारित करते हैं। उनके व्यक्तित्व के इस प्रभाव से प्रभावित होकर चंपारन के अनेक युवक-युवतियाँ साहित्यिक मार्ग को अपनाने के लिए तत्पर होते हैं और प्रो. राय उन युवा धड़कनों के सबसे बड़े रोल मॉडल बन जाते हैं। इस प्रकार नदी की भाँति प्रो. राय भी अपने व्यक्तित्व के पाट को चौड़ा करते रहते हैं। लेकिन पाट की यह चौड़ाई स्वयं के लिए कम

चंपारन के लिए अधिक है। यही कारण है कि प्रो. राय का व्यक्तित्व भी जीवनदायिनी नदी की भाँति निरंतर प्रवाहमान है।

नदी युवावस्था, प्रौढ़ावस्था से होती हुई वृद्धावस्था में पहुँचती है। यह वह अवस्था है, जब नदी पर्वतों से ढोकर लानेवाले मलबे को समतल में चारों तरफ बिखेर देती है, जिससे नदी कई अलग-अलग छोटी-छोटी धाराओं में प्रवाहित होने लगती है। दूर-दूर तक फैले नदी के पाट को देख पाना, पहचान पाना मुश्किल होता है। लेकिन इस बीच नदी अनेक बेशकीमती पत्थरों को तराशकर अपने मुहाने पर ला देती है। जैसे नारायणी नदी में शालिग्राम का मिलना। शालिग्राम न सिर्फ बेशकीमती तराशे हुए पत्थर हैं, बल्कि आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी इनका बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। सामान्य तौर पर वैष्णव धर्म में शालिग्राम-पूजन का विशेष महत्त्व है। हम जब नदी की इस प्रौढ़ावस्था पर विचार करते हैं तो प्रो. सतीश कुमार राय का व्यक्तित्व भी उसी सर्जक अवस्था में नजर आता है। कारण यह है कि वर्तमान अवस्था में प्रो. राय ने भी सैकड़ों युवा शालिग्रामों को पश्चिमी चंपारन के मुहाने पर खड़ा कर दिया है। वे सभी शालिग्राम अपने-अपने क्षेत्र में अग्रणी एवं सम्माननीय हैं। आज भी अनेक युवा शालिग्राम की अवस्था में आने की पंक्ति में खड़े हैं।

हजारों वर्षों से अनेक नदियाँ इन तीनों अवस्थाओं से गुजरती हुई विस्तृत समतल भूमियों का निर्माण एवं शालिग्रामों का सृजन करती हुई आ रही हैं। यह प्रक्रिया अनवरत जारी है। ठीक वैसे ही चंपारन की साहित्यिक परंपरा भी निरंतर गतिमान है। बीच-बीच में प्रो. सतीश कुमार राय जैसे व्यक्तित्व त्रिवेणी (गंगा, यमुना एवं सरस्वती) की भाँति निर्मित होते हैं और इस परंपरा को गति प्रदान करते हैं।

एक समय था, जब यूनान के विचारकों की गूँज पूरे विश्व में सुनाई देती थी। गुरु-शिष्य-परंपरा का पाश्चात्य उदाहरण सुकरात, प्लेटो और अरस्तू से बेहतर अब तक देखने को नहीं मिला। भारतीय वाङ्मय में विद्या प्रदान करने के लिए जो कड़ी बनी, उसमें ब्रह्माजी ने शिवजी को और शिवजी ने सरस्वती के माध्यम से मनुष्यों के बीच विद्यादान का मार्ग बनाया। कथाओं में सबसे प्रसिद्ध रामकथा है। इसे भी गुरुओं के श्रीमुख से जन-जन तक लाया गया। हिंदी साहित्य में आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिककाल गुरु-शिष्य-परंपरा की देन है।

चंपारन के आकाशधर्मा गुरु स्वर्गीय प्रो. बलराम मिश्रजी की बात किए बगैर प्रो. सतीश कुमार राय से संबंधित बात पूरी नहीं हो सकती। प्रो. बलराम मिश्रजी उन्हें कहा करते थे—सतीश पंडित। प्रो. मिश्र मेरे पिताजी के अनन्य मित्र थे। मैं साहित्य का विद्यार्थी बना, इसके मूल में प्रो. बलराम मिश्र, प्रो. अविनाश चंद्र मिश्र और प्रो. सतीश कुमार राय के व्यक्तित्वों के प्रभावों और प्रेरणाओं की बड़ी भूमिका है। प्रो. बलराम मिश्र मेरे गुरु थे और वे मुझे पुत्रवत् स्नेह देते थे। डॉ. सतीश कुमार राय प्रो. मिश्र के सर्वाधिक प्रिय शिष्य थे।

श्री सी.एस. झा मेरे मौसाजी हैं। वे समानांतर रूप से प्रो. बलराम मिश्र, प्रो. सतीश कुमार राय और चंपारन के साहित्यकारों के अत्यंत प्रिय व्यक्ति हैं। उन्होंने भारतीय सेना में रहकर देश की सेवा की, एक बैंककर्मी के रूप में निष्ठावान कार्यकर्ता रहे, लेकिन उनकी सबसे बड़ी खासियत है उनका साहित्यानुराग। उनका यह साहित्यानुराग आज भी प्रेरणादायक है। जिन लोगों की प्रो. राय से गहरी आत्मीयता रही है और जो उनकी रचनाओं के प्रथम श्रोता रहे हैं, उनमें श्री चंद्रशेखर झा और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती उमा झा का विशिष्ट स्थान है। श्री झा के पिताजी पं. फुलेना झा हिंदी संस्कृत के उद्‌भट विद्वान रहे हैं। उनका स्नेह भी प्रो. राय को मिलता रहा है।

जैसा मैंने सुना है कि अपने विद्यालयीय जीवन से ही श्री राय साहित्य-सर्जन में लीन तथा साहित्यिक गतिविधियों में सक्रिय रहे हैं। बिहार के प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान के.आर. उच्च विद्यालय, बेतिया में साहित्य परिषद् की स्थापना हुई और श्री राय उसके संस्थापक अध्यक्ष बने। विद्यालयीय पत्रिका 'सत्यार्थी' में उनकी कविताएँ निरंतर प्रकाशित होती आई हैं। मैट्रिक की परीक्षा देने के बाद जिला स्तर पर साहित्य परिषद् की स्थापना के लिए उन्होंने एम.जे.के. कॉलेज के यशस्वी प्राध्यापक प्रो. बलराम मिश्र से संपर्क किया। दोनों एक-दूसरे से प्रभावित हुए। गुरु के रूप में श्री राय को रामकृष्ण परमहंस की तरह प्रो. बलराम मिश्र मिले। डॉ. राय स्वयं मानते हैं कि उनकी मुलाकात अगर प्रो. मिश्र जी से नहीं होती, तो वे साहित्य और अध्यापन के क्षेत्र में नहीं आए होते।

प्रो. राय कई विषयों में डॉ. मिश्र से भिन्न विचार रखते थे, पर उनके गुरु ने इसके लिए कभी उन्हें टोका नहीं, बल्कि इसके विपरीत उन्हें

प्रोत्साहित करते रहे कि ज्ञान के क्षेत्र में मतभिन्नता अस्वाभाविक नहीं है। डॉ. मिश्र के साथ प्रो. राय ने कई कार्य किए, कई योजनाएँ कार्यान्वित कीं। आज भी प्रो. मिश्र का प्रसंग आने पर प्रो. राय भावुक हो जाते हैं और अपने आकाशधर्मा गुरु के स्नेह और प्रोत्साहन का स्मरण कर उनकी आँखें भर आती हैं।

प्रो. राय अपने निर्माण में अनेक लोगों के योगदान का बार-बार स्मरण करते हैं। एक विद्यार्थी के रूप में उन्होंने कई लोगों से सीखा है। एक शिक्षक के रूप में प्रो. कामेश्वर शर्मा, प्रो. शिवचंद्र 'अमर', प्रो. श्यामनंदन किशोर, प्रो. महेंद्र मधुकर, प्रो. अवधेश्वर अरुण उनके प्रेरक और कई अर्थों में आदर्श रहे हैं। लेकिन जिन विद्वानों ने उन्हें दिशा और दृष्टि दी है, जिन्हें वे गुरु-रूप में समादर देते हैं, वे चार हैं–श्री रघुनाथ प्रसाद विभोर, श्री जगन्नाथ पांडेय, प्रो. बलराम मिश्र और प्रो. प्रमोद कुमार सिंह। श्री रघुनाथ प्रसाद विभोर सिसवा भूमिहार, लौरिया, पश्चिम चंपारन के प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक थे–सुकवि और सहृदय। प्रो. राय को उन्होंने ही अक्षर-ज्ञान कराया। अपने साहित्यिक संस्कार के विकास में वे उनकी महती भूमिका स्वीकार करते हैं।

श्री जगन्नाथ पांडेय के.आर. हाई स्कूल, बेतिया में हिंदी-संस्कृत के शिक्षक थे। उन्होंने प्रो. राय को भाषिक शुद्धता का संस्कार दिया। प्रो. बलराम मिश्र ने श्री राय की रचनाधर्मिता को दिशा दी और प्रो. प्रमोद कुमार सिंह ने उनकी शोध-दृष्टि का विस्तार किया।

प्रारंभ में श्री राय ने कविताएँ लिखीं, मंचों पर काव्यपाठ किया; नाटक लिखे, उनका मंचन कराया; साहित्यिक संस्थानों का गठन किया और पश्चिमी चंपारन के साहित्यिक परिवेश को जीवंत रखने की पहल की। उच्च शिक्षा में आने के बाद वे पूरी तरह अध्यापन और शोध का होकर रह गए। मुझे लगता है कि आज भी उनके भीतर एक समर्थ रचनाकार जीवंत है, जिसे उन्होंने छिपाकर रखा है। उनकी संपादकीय टिप्पणियों में उसकी झलक अवश्य मिल जाती है। प्रो. राय को शोधमर्मज्ञ माना जाता है। हिंदी शोध की समृद्धि में उनका योगदान रेखांकित करने योग्य है।

जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, बचपन से ही मैंने डॉ. राय के बारे में सुन रखा था। स्नातक–द्वितीय खंड की परीक्षा के बाद मैं प्रो. राय के संपर्क में आया। वे एक भोज में सम्मिलित होने मेरे गाँव आए थे। अगले

दिन मेरे पिताजी ने उन्हें चाय पर आमंत्रित किया। मेरे पिताजी ने प्रो. राय से मेरे मार्गदर्शन के लिए आग्रह किया। उसी समय से मैं सतीश सर की गुरुतर स्नेहछाया में आया। बेतिया महाराज की धर्मपत्नी महारानी जानकी कुँवर के नाम पर स्थापित एम.जे.के. कॉलेज, बेतिया से बी.ए. ऑनर्स की पढ़ाई करने के बाद मैं पटना विश्वविद्यालय में एम.ए. की पढ़ाई के लिए गया। पटना विश्वविद्यालय से एम.ए. करने के बाद मैंने सतीश सर के निर्देशन में 'हिंदी काव्यालोचन को बिहार की हिंदी पत्रकारिता की देन' विषय पर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। इसे मेरा सौभाग्य ही माना जाना चाहिए कि आज मैं उनके विभागीय सहयोगी के रूप में उनके साथ हूँ। मेरे निर्माण में मेरे माता-पिता और गुरुदेव प्रो. बलराम मिश्र के साथ सतीश सर का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

प्रो. सतीश कुमार राय के व्यक्तित्व का सर्वाधिक सबल पक्ष उनका कुंठामुक्त जीवन है। अपने विद्यार्थियों को वे बाँधकर नहीं रखते। उन्हें दीक्षित कर मुक्त कर देते हैं। अपने विद्यार्थियों की उपलब्धियों पर वे बालक की तरह प्रसन्न होते हैं। उनके अनेक विद्यार्थी और विद्यार्थीनुमा अनुज आज भी शिक्षा के साथ अनेक क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रहे हैं। ऐसे लोगों में भारत सरकार के वरीय प्रशासनिक पदाधिकारी श्री नीतीश्वर का नाम अग्रिम पंक्ति में है। श्री नीतीश्वर एक सफल प्रशासनिक पदाधिकारी होने के साथ प्रतिष्ठित कवि भी हैं। बिहार राजपत्रित सेवा की डॉ. चंद्रलता, राजभाषा अधिकारी डॉ. दीप कुमार, डॉ. विजय कुमार पांडेय, डॉ. कुमार अनुभव, स्टेट बैंक के उपमहाप्रबंधक डॉ. संजय कुमार, मुंबई दूरदर्शन के प्रोड्यूसर डॉ. अश्विनी कुमार के अलावा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. श्यामशंकर सिंह, डॉ. संजय कुमार, डॉ. राकेश रंजन, डॉ. हेमा कुमारी और डॉ. संजय कुमार यादव सहित दर्जनों विभूतियाँ पत्रकारिता के क्षेत्र में भी स्थापित हैं।

श्री गंगानंदन झा 'कलाधर' एक सुकवि व्यक्ति का नाम है। साहित्य के लिए जीना और साहित्यकारों को प्रोत्साहित करना 'कलाधर'जी के व्यक्तित्व की मूल विशेषता है। डॉ. सतीश कुमार राय कई मामलों में गंगानदंन झा 'कलाधर' से आज भी प्रभावित हैं। स्वर्गीय किशोरी लाल अंशुमाली बेतिया के जाने-माने साहित्यकार और कवि थे। प्रो. सतीश कुमार राय ने सदैव उन्हें बड़े भाई का दर्जा दिया है। ठीक वैसे ही डॉ. गोरख प्रसाद

'मस्ताना' अपनी साहित्य-सेवा और मंचीय अभिव्यक्ति की प्रभावी क्षमता की वजह से विख्यात हैं। श्री अरुण गोपाल मेरे आदरणीय अग्रज-तुल्य और सतीश सर के अत्यंत प्रिय अनुज-तुल्य हैं। उनका कविता-लेखन अत्यंत प्रभावशाली होता है और वे कवि-गोष्ठियों में सदैव छा जानेवाला व्यक्तित्व रखते हैं।

प्रो. सफदर ईमाम कादरी उर्दू के राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के मान्य विद्वान थे। साथ ही प्रो. कादरी बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। प्रो. सतीश कुमार राय बेतिया में रहने के दौरान प्रो. कादरी से प्रभावित हुए, जिसका प्रभाव आज भी उनकी भाषा-शैली पर दिखता है। डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी भी प्रो. सतीश कुमार राय के अनुजवत् और आज के स्थापित शिक्षाशास्त्री हैं। साहित्य कला संगम जैसी संस्था की स्थापना कर उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

प्रो. परमेश्वर भक्त मेरे और सतीश सर दोनों के शिक्षक रहे हैं। अत्यंत निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ वर्ग-संचालन करना और विद्यार्थियों को स्नेह एवं अधिकार के साथ परिमार्जित करना प्रो. भक्त के व्यक्तित्व की विशेषता रही है। श्री चतुर्भुज मिश्र चंपारन के सजग, सहज एवं प्रातिभ साहित्यकार और साहित्यानुरागी हैं। श्री मिश्र ने महाराजा पुस्तकालय, बेतिया को अपना अथक रचनात्मक सहयोग दिया है। सतीश सर के वे अत्यंत प्रिय हैं।

श्री सुरेश गुप्त मेरे बड़े भाई श्री राजेश कुमार झा के सहपाठी हैं। श्री गुप्त बैंककर्मी के साथ सुकवि हैं। कवि-गोष्ठियों में श्री सुरेश गुप्त चंपारन का प्रतिनिधित्व करते हैं। श्री गुप्त श्री सतीश कुमार राय के अत्यंत करीबी साहित्य-सेवी हैं। श्री शिवशंकर सत्यार्थी सबसे कम उम्र में पत्रकारिता के क्षेत्र में स्थापित नाम हैं। सत्यार्थीजी मेरे सहपाठी हैं और प्रो. सतीश कुमार राय के प्रिय शिष्य हैं। श्री रवि रंक चंपारन के पत्रकारों में चर्चित हैं एवं अपने जुझारू व्यक्तित्व के कारण जाने जाते हैं। रविजी मेरे सहपाठी और प्रो. सतीश कुमार राय के प्रिय शिष्य हैं।

स्वर्गीय ब्रजेंद्र शंकर गर्ग श्री शिवशंकर सत्यार्थी के बड़े भाई थे। अंग्रेजी साहित्य के मर्मज्ञ होने के साथ हिंदी साहित्य एवं पत्रकारिता में उनकी गहरी रुचि थी। मेरी पुस्तक 'बिहार की हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता' में, जो सतीश सर के आशीर्वाद-स्वरूप प्रकाशित हुई, स्वर्गीय ब्रजेंद्र शंकर

गर्ग की बड़ी भूमिका रही। डॉ. सुनील कुमार मेरे अनुजवत् और सतीश सर के अत्यंत प्रिय छात्र रहे हैं। डॉ. सुनील ने मेरे शोध-कार्य में एक प्रातिभ शोधार्थी की तरह सकारात्मक सहयोग किया है। यह बात और है कि डॉ. सुनील के शैक्षणिक जीवन के विकास में प्रत्यक्ष रूप से मेरी कोई भूमिका नहीं हो सकी।

प्रो. सतीश कुमार राय का व्यक्तित्व पूरा होता है श्रीमती प्रभाजी से। सतीश सर के संपूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण में धर्मपत्नी के रूप में श्रीमती प्रभा देवी का उल्लेखनीय और अविस्मरणीय सहयोग है। इन दोनों की दो सुयोग्य पुत्रियाँ–डॉ. प्रज्ञा सुरभि और सुश्री समीक्षा सुरभि–ज्ञानकुंज के विस्तार की तरह हैं। आनेवाले समय में ये दोनों सुपुत्रियाँ सतीश सर के यश का विस्तार करेंगी–डॉ. प्रज्ञा सुरभि संगीत के क्षेत्र में और सुश्री समीक्षा सुरभि हिंदी साहित्य के क्षेत्र में। सैकड़ों शिष्यों के समर्थ गुरु प्रो. सतीश कुमार राय एक सफल पति और पिता के रूप में प्रतिष्ठित हैं। सामाजिक और मानवीय सरोकार में अत्यंत आत्मीय तथा किसी के भी दु:ख की घड़ी में सहायता तथा संबल देने के लिए सतत तत्पर प्रो. सतीश कुमार राय का व्यक्तित्व अत्यंत उदार है।

यहाँ प्रसंगवश सतीश सर के बड़े भाई और भतीजे का पुण्य-स्मरण करना मेरे लिए अत्यंत जरूरी है। स्वर्गीय अशोक कुमार राय सतीश सर के बड़े भाई थे। चंपारन के बड़े भाई एक समय के बाद पिता की भूमिका में आ जाते हैं। अशोक बाबू अत्यंत लोकप्रिय, सहृदय और विराट् व्यक्तित्व के धनी थे। अपने गाँव (सिसवा भूमिहार) के अत्यंत जनप्रिय मुखिया के रूप में वे प्रसिद्ध रहे। मेरा चयन असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में हो चुका था। यह वर्ष 2003 की बात है। आकाशवाणी, पटना से यह समाचार प्रसारित हुआ कि महामहिम कुलाधिपति सह राज्यपाल जस्टिस एम. रामा जोइस ने व्याख्याताओं के योगदान के लिए हरी झंडी दे दी है। इस समाचार से बिहार के सैकड़ों नव-चयनित व्याख्याता मुख्यालय में योगदान के लिए तत्पर हो गए। मैं गाँव में था। अशोक बाबू ने इस समाचार को सुनने के बाद मुझे बताया कि मैं मुजफ्फरपुर जा रहा हूँ। तुम चाहो तो मेरे साथ चलकर योगदान कर सकते हो। मैं उन्हीं के साथ योगदान के लिए मुजफ्फरपुर आया। स्वर्गीय अलिंद सतीश सर के प्रिय भतीजा थे। अलिंद ने मेरे शोधकार्य में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहण किया था। एक साहित्यानुरागी और

भविष्णु व्यक्तित्व का असमय गुजर जाना मेरे लिए और सतीश सर के पूरे परिवार के लिए अत्यंत दुःखद रहा।

भारतेंदु-मंडल की तरह चंपारन-मंडल में दर्जनों कवियों, कहानीकारों, शायरों, उपन्यासकारों, पत्रकारों एवं साहित्यानुरागियों की लंबी फेहरिस्त है। चंपारन-मंडल को सक्रिय और जीवंत रखने में प्रो. सतीश कुमार राय की बड़ी भूमिका है। बल्कि यह कहा जा सकता है कि दशकों से प्रो. राय ने चंपारन-मंडल में केंद्रीय व्यक्तित्व का निर्वहण किया है।

अमृतलाल नागर ने सूरदास की जीवनी पर आधारित 'खंजन नयन' और तुलसीदास की जीवनी पर आधारित 'मानस का हंस' नामक बहुचर्चित उपन्यास लिखे। विष्णु प्रभाकर ने प्रसिद्ध बांग्ला उपन्यासकार शरत्चंद्र की जीवनी पर आधारित उपन्यास 'आवारा मसीहा' लिखा। हिंदी के मूर्धन्य आलोचक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का स्मरण करते हुए श्री विश्वनाथ त्रिपाठी ने 'व्योमकेश दरवेश' की रचना की। प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी देवी ने अपनी यादों को 'प्रेमचंद घर में' नामक पुस्तक में सहेजा। राहुल सांकृत्यायन का स्मरण करते हुए विष्णुचंद्र माथुर ने 'समय साम्यवादी' नामक पुस्तक लिखी। जनकवि नागार्जुन की स्मृतियों को रचनात्मक रूप देते हुए उनके पुत्र शोभाकांत ने 'बाबूजी' नाम से महत्त्वपूर्ण जीवनीपरक रचना की। कुमुद नागर ने अमृतलाल नागर के जीवन पर आधारित साहित्यिक रचना 'वटवृक्ष की छाया में' नाम से की। 'तार सप्तक' के महत्त्वपूर्ण कवि भारतभूषण अग्रवाल के जीवन पर आधारित पुस्तक 'स्मृति के झरोखे में' बिंदु अग्रवाल की साहित्यिक कृति है। वहीं अज्ञेय के जीवन पर आधारित पुस्तक 'शिखर से सागर तक' की रचना राजकमल राय ने की। हंसराज रहबर ने विवेकानंद को याद करते हुए 'योद्धा संन्यासी विवेकानंद' नामक चर्चित पुस्तक लिखी। वहीं रोमाँ रोलाँ ने 'विवेकानंद', 'महात्मा गांधी' एवं 'रामकृष्ण परमहंस' नामक पुस्तक के माध्यम से तीनों महापुरुषों को याद किया। जगदीश चंद्र माथुर ने अलग-अलग क्षेत्रों के बारह प्रतिभावान व्यक्तित्व को केंद्र में रखते हुए अपनी साहित्यिक रचना 'जिन्होंने जीना जाना' की रचना की। असाधारण व्यक्तित्व को याद करने की परंपरा लंबे समय से साहित्य में चली आ रही है। चंपारन की संस्था 'क्षितिज' ने इस परंपरा को जीवंत, रचनात्मक और सार्थक दिशा प्रदान करने का प्रयास किया है। प्रो. सतीश कुमार राय का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा-संपन्न है।

'क्षितिज' के संयोजक डॉ. विनय कुमार सिंह, डॉ. संजय कुमार यादव और श्री कुमार अनुपम निश्चित रूप से इस प्रयास के लिए बधाई के पात्र हैं। 'क्षितिज' डिजिटल भारत की परिकल्पना के तहत लगातार फेसबुक पर सर्जनात्मक रूप से सक्रिय है। वैश्विक महामारी कोरोना के कठिन काल में भी साहित्य के इन नव योद्धाओं ने निरंतर अपनी सक्रियता को बनाए रखा।

प्रो. सतीश कुमार राय की ख्याति वर्तमान में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर है। बावजूद इसके डॉ. राय की षष्टिपूर्ति पर यह कहा जा सकता है कि इनके व्यक्तित्व का मूल निर्माण चंपारन में हुआ। अगर इनके पूरे व्यक्तित्व को दो भागों में बाँट दें, तो इनके जीवन के तीन दशक चंपारन में बीते हैं और तीन दशक मुजफ्फरपुर में। चंपारन इनकी जन्मस्थली है तो मुजफ्फरपुर कर्मस्थली। प्रस्तुत व्यक्तित्व-विवरण में चंपारन को केंद्र में रखा गया है। कर्मस्थली मुजफ्फरपुर होते हुए भी प्रो. राय ने अपने व्यक्तित्व-निर्माण की दृष्टि से चंपारन को सदा विशेष महत्त्व दिया है। इस महत्त्व को ध्यान में रखकर ही मैंने चंपारन को इस आलेख में विशेष तौर पर रेखांकित किया है। मुजफ्फरपुर में विकसित प्रो. राय के रचनात्मक व्यक्तित्व को इस आलेख के दूसरे चरण में प्रस्तुत किया जाएगा। विश्वविद्यालय हिंदी विभाग, जो बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रम और पीएच.डी. उपाधि के लिए राज्य के सर्वाधिक सक्रिय केंद्रों में से एक है–प्रो. राय इस साहित्य-स्थली, इस साहित्यिक तीर्थ और शोधकेंद्र के मुखिया हैं। इस केंद्र पर फिलवक्त प्रो. राय के सहयोगी के रूप में हिंदी कथा-साहित्य के मर्मज्ञ प्रो. त्रिविक्रम नारायण सिंह, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के ज्ञाता प्रो. वीरेंद्रनाथ मिश्र, समकालीन युवा कवि डॉ. राकेश रंजन, हिंदी के युवा कथाकार डॉ. सुशांत कुमार, साहित्य और तकनीक में समान रूप से दक्ष डॉ. उज्ज्वल आलोक, मध्यकालीन साहित्य की विदुषी डॉ. संध्या पांडेय और हिंदी पत्रकारिता के विशेषज्ञ डॉ. पुष्पेंद्र कुमार अपनी सेवा दे रहे हैं। प्रो. राय के नेतृत्व में विश्वविद्यालय हिंदी विभाग में राष्ट्रकवि दिनकर की प्रतिमा स्थापित हुई। साथ ही, त्रि-द्विवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रो. राय के प्रधान संपादकत्व में साहित्य पर आधारित 'नया प्रस्थान' और शोध पर आधारित 'शोध-मनीषा' नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन विश्वविद्यालय हिंदी विभाग की ओर से किया गया। एकल काव्यपाठों, एकल व्याख्यानों,

संगोष्ठियों और परिचर्चाओं के साथ विभिन्न वेबिनारों का आयोजन प्रो. राय के कार्यकाल की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं। हिंदी विभाग के पुस्तकालय को राष्ट्रकवि रामधारीसिंह दिनकर के नाम पर बने नए भवन में पुनर्स्थापित किया गया। विभाग के विभिन्न कक्षों के नामकरण पूर्व विभागाध्यक्षों के नाम पर किए गए।

'अनुशासन के साथ उन्मुक्त रहना और उन्मुक्त रहने देना' के सिद्धांत का पालन करनेवाले इस सिद्ध आचार्य की षष्टिपूर्ति पर मैं उनका अभिनंदन करता हूँ। साथ ही उनके स्वस्थ, सक्रिय और दीर्घ जीवन की मंगलकामना करता हूँ।

–प्रोफेसर, विश्वविद्यालय हिंदी विभाग,
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर।